हम तो कबहूँ न हित उपजाये.....

हम तो कबहूँ न हित उपजाये।।टेक।।

सुकुल-सुदेव-सुगुरु सुसंग हित, कारन पाय गमाये।।१।।
ज्यों शिशु नाचत, आप न माचत, लखनहार बौराये।
त्यों श्रुत बांचत आप न राचत, औरन को समुझाये।।२।।

सुजस लाभ की चाह न तज निज, प्रभुता लखि हरखाये।
विषय तजे न रचे निज पद में, पर पद अपद लुभाये।।३।।

पाप त्याग जिन जाप न कीन्हों, सुमन चाप तपताये।
चेतन तन को कहत भिन्न पर देह सनेही थाये।।४।।

यह चिर भूल भई हमरी अब, कहा होत पछताये।
'दौल' अजौं भवभोग रचो मत, यौं गुरु वचन सुनाये।।५।।

-कविवर दौलतराम

ध्रुवोक्ति

छंडहि पेमसु परियणहं संप्पइ पुत्त कलत्त।
जागत्त मुसइ चोरडउ लभइ खोज न पत्त।।

अर्थ- प्रिय परिजनों के प्रति ममत्व, सम्पत्ति, पुत्र और पत्नी के प्रति ममत्व को छोड़ दो, फिर न जागने की जरूरत है और न लुटने या चोरी होनका डर है तथा न कुछ खोजना है और न कुछ प्राप्त करना है। **– बुद्धिरसायण**

मुनिराज तो बादशाह हैं.....

बबूल के पेड़ के नीचे बैठे मुनिराज जिनके शरीर पर कपड़ा नहीं है, गरम-गरम हवा लगती है, परन्तु अंदर आनंद की झनझनाहट बज रही है, वे सुखी हैं। दूसरों को ऐसा लगे कि यह बाबा भिखारी है, पर ये भिखारी नहीं बादशाह हैं। चक्रवर्ती हो तो भी वह दुःखी है, बादशाह नहीं।

-आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी

सहयोग जगत

परम संरक्षक –

श्री धुलजीभाई ज्ञायक, बांसवाडा
श्री अमृतलाल एम. शाह, मलाड-मुम्बई
सुशीला बेन बी. मेहता, मलाड-मुम्बई
रमणलाल नेमचंद शाह, मलाड-मुम्बई
डॉ. वासन्तीबेन शाह, मुम्बई
श्री जयकुमार जैन, रतलाम
श्री आनन्दकुमार अजमेरा, रतलाम
श्री सी. एस. जैन, देहरादून
श्रीमती जीजीबाई पुष्पलता
ध.प. श्री अजितकुमार जैन, छिन्दवाडा
नलिनी प्रफुल्लचन्द्र दोसी, मुम्बई
श्री जयन्तकुमार आनन्द जैन, रतलाम
श्रीमती स्वाति कलमकर, डलास यू.एस.ए.
पं. सिद्धार्थकुमार दोसी, रतलाम
शान्ताबैन मांगीलाल जैन, अहमदाबाद

संरक्षक -

श्री कस्तूरचंद सिंघवी, उदयपुर
श्री भागचंद जैन कालिका, उदयपुर
श्री श्याम शाह, उदयपुर
श्री वीरेन्द्र मथुरालाल भलावत, इन्दौर
श्रीमती निधि ध.प. स्व. श्री मलय भवानजी रतलाम
श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा, सूरत
श्रीमती शकुंतला पाटनी ध.प.
श्री बाबूलाल पाटनी कोलकाता
श्री विपिनभाई वादर, जामनगर

परम सहायक -

श्रीमती कंचनबेन चंदूलाल शाह, मलाड
श्रीमती चन्दा शाह ध. प. श्री हंसमुखलाल शाह, कुशलगढ़

सहायक -

श्री प्रकाशचंद गंभीरचंद जैन, अहमदाबाद
श्री इन्दरमल जैन सीहोर वाले, उदयपुर

'ध्रुवधाम' पत्रिका के निर्बाध प्रकाशन हेतु आप से सहयोगी बनने हेतु सादर अनुरोध है –

परम संरक्षक - १५ हजार रुपये
संरक्षक - ११ हजार रुपये
(प्रत्येक माह में नाम प्रकाशित किये जायेंगे ।)
परम सहायक - ७ हजार रुपये
सहायक - ५ हजार रुपये
(प्रत्येक ३ माह में नाम प्रकाशित किये जायेंगे ।)

जिन्होंने पत्रिका का सदस्यता शुल्क जमा नहीं करवाया है, वह कृपया १००रु. त्रिवर्षीय ५०० रु.पन्द्रह वर्षीय सदस्यता शुल्क भेज कर सहयोग प्रदान करें । आप अपनी सहयोग राशि बैंक आफ बड़ोदा, ठीकरिया-बाँसवाड़ा के श्री ज्ञायक चरीटेबल ट्रस्ट के संख्या 15880100001077 में जमा करा सकते हैं । समाचार एवं अन्य सूचनायें dhruvraj1008@rediffmail.com पर भेज सकते हैं । **– प्रबन्ध सम्पादक**

सम्पादकीय –

क्या ऐसा नहीं हो सकता?

'ध्रुवधाम' पत्रिका में मेरे द्वारा समय-समय पर लिखे गये संपादकीय लेखों का संकलन 'बढ़ते भगवान-घटते भक्त' समाज में शत-प्रतिशत पाठकों द्वारा सराहा गया एवं मात्र १ माह में ही द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया। संकलन में संकलित 'बढ़ते भगवान-घटते भक्त' एवं 'कौन कहता है भगवान भरोसे गाड़ी नहीं चलती' लेखों के माध्यम से समाज में बढ़ती प्रतिमाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है और लगभग सभी पाठकों ने इस बात को स्वीकार किया है कि हम मन्दिरों में प्रतिमायें बढ़ाते जा रहे हैं और पूजा करने वाले उस अनुपात में नहीं बढ़ रहे हैं। साथ ही यह भी कहाँ आवश्यक है कि अगर पूजा करने वाले अधिक हों तो प्रतिमायें भी अधिक हों; एक प्रतिमा की सैकड़ों लोग पूजा कर सकते हैं। यदि किसी तीर्थक्षेत्र पर या किसी विशिष्ट दर्शनीय क्षेत्र पर अगर बहु प्रतिमा वाले या स्थापत्य की दृष्टि से विशाल मंदिर बनें तो कोई पाप हो ऐसा तो है नहीं, ना ही उनका सर्वथा निषेध करने की भावना व्यक्त की जा रही है। हमारा मन्तव्य तो दर्शक व पूजक बढ़ाने तथा समाज के धन को शिक्षा, चिकित्सा, साहित्य प्रकाशन, आत्म साधना हेतु केन्द्र स्थापित करने एवं इसी तरह के अन्य कार्यों में लगाने की प्रेरणा देना मात्र है।

हमारे उक्त लेख पढ़ने के साथ ही एक ओर जहाँ लोगों ने सहमति दी है वहीं एक यक्ष प्रश्न भी खड़ा किया है कि बिना अधिक प्रतिमाओं के कोई भी केन्द्र संस्थापित/संचालित नहीं हो सकता। क्योंकि लोग प्रतिमाओं के नाम पर ही दान करते हैं अतः कुछ भी कार्य करना हो तो मंदिर बनाना, प्रतिमायें विराजमान करना व पंचकल्याणक कराना अनिवार्य सा हो गया है। हमारे मित्रों द्वारा हमें चुनौती देते हुये कहा गया है कि आपने उदयपुर में जैन बालिका संस्कार संस्थान चलाने हेतु एक संकुल स्थापित करने का निर्णय किया है साथ ही उसमें आपने विचार किया है कि इस संकुल में अधिक प्रतिमायें विराजमान नहीं करेंगे, तो फिर आपको सहयोग कौन करेगा? अब आपने लिखा तो बहुत अच्छा है पर अब आप स्वयं बिना प्रवाह में बहे काम करके दिखाइये ?

मैं सच कहूँ तो यह सत्य है कि मैं अधिक/अनावश्यक, प्रतिमाओं/प्रतिष्ठाओं से सहमत नहीं हूँ यही मैंने

लिखा है और लोगों की सद्भावनायें पाकर प्रफुल्लित भी हूँ, परन्तु समाज की मानसिकता देखकर सशंकित हूँ कि उदयपुर का या अन्य स्थान का कार्य भी मेरी भावना (जो कि हजारों लोगों की भी है) के अनुसार कार्य सम्पन्न हो सकेगा या फिर मुझे भी समाज के प्रवाह में बहकर न चाहते हुये भी वही कार्य करना होगा जो सभी कर रहे हैं। क्या लोगों की केवल प्रशंसा प्राप्त होगी, सहयोग नहीं?

प्रश्न यह है कि हमारी भावना के अनुसार भी कार्य हो, पर कहीं भी संकुल बनाने व संस्थान चलाने हेतु धन तो चाहिए ही है वह कैसे आवे ? इस संबंध में मैं निवेदन करना चाहूँगा कि क्या समाज गुप्तदान, मंदिर निर्माण, संस्थान संचालन, अन्य व्यवस्थायें जुटाने या संकुल के संरक्षक आदि बन कर संकुल की स्थापना में सहभागी नहीं बन सकते? क्या स्वाध्यायी समाज भी इसी मानसिकता को लेकर चलेगी कि भगवान विराजमान करके ही पुण्य कमाया जा सकता है, क्या जिनमंदिर रूपी देव के निर्माण में सहभागी बनकर पुण्यार्जन नहीं किया जा सकता ? यदि अपना नाम लिखाने की भावना हो (सामान्यतया सब कुछ जानते हुये भी होती ही है) तो क्या प्रतिमा पर नाम लिखाने से ही पुण्यार्जन होगा, मंदिर के बाहर परम संरक्षक, निर्माण सहयोगी, संचालन सहयोगी बनकर नाम नहीं लिखाया जा सकता (यहाँ लिखे हुये नाम तो कोई पढ़ भी सकता है) ? क्या जिनवाणी के प्रकाशक बनकर धन दान नहीं किया जा सकता? क्या स्वाध्यायी समाज भी मात्र प्रतिमाओं से नाम और दाम की सार्थकता समझती रहेगी ? अरे भामाशाह ने तो बिना नाम के सारी संपत्ति देशहित में समर्पित कर दी थी। तो क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि जिनवाणी के स्वाध्यायी, हमारे पाठक व समाज में कुछ नया करने के उत्साही साधर्मी इस संकुल की स्थापना में हमें उत्साहवर्धक सहयोग प्रदान करें, नव देवताओं को एक जैसा समझें, इससे भी अधिक चैतन्य परमात्मा के रूप में जो सजीव बालक-बालिकायें हैं उनके जीवन में तत्त्वज्ञान प्रदान करने हेतु भरपूर सहयोग करें और एक नई परम्परा का सूत्रपात करें कि बिना अधिक प्रतिमा के भी जिनमंदिर, स्वाध्याय भवन या संकुल खड़ा किया जा सकता है।

यह कल्पना साकार होना भले ही असंभव न हो तो भी दुस्साहसी तो है ही; मैंने तो साहस दिखाया है पर समग्र समाज का सहयोग अपेक्षित है अन्यथा हमें भी सभी के साथ उसी दौड़ में शामिल होना पड़ेगा जिसकी मुझे और आपको अपेक्षा नहीं है।

विषापहार-प्रवचन

(महाकवि धनंजय विरचित 'विषापहार स्तोत्र' पर श्रीकानजीस्वामी के प्रवचन)

काव्य-28

प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैः-
दग्धस्य देवव्यवहारमाहुः।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्वम्-
दृष्टं कपालस्य च मंगलत्वम्॥

विशद मनोज्ञ बोलनेवाले,
पण्डित जो कहलाते हैं,
क्रोधादिक से जले हुए को,
वे यों देव बताते हैं।
जैसे 'बुझे हुए' दीपक को
'बढ़ा हुआ' सब कहते हैं,
और कपाल विघट जाने को,
मंगल हुआ समझते हैं॥

अन्वयार्थ- (प्रशस्तवाचः) सुन्दर बोली बोलनेवाले **(चतुराः)** चतुर मनुष्य **(कषायैः दग्धस्य)** कषायों से जले हुए पुरुष के प्रति भी **(देवव्यवहारम् आहुः)** देव शब्द का व्यवहार करना कहते हैं। सो ठीक ही है **(हि)** क्योंकि **(गतस्य दीपस्य)** बुझे हुए दीपक का **(नंदित्वम्)** बढ़ना **(च)** और **(कपालस्य)** फूटे हुए घड़े का **(मंगलत्वम्)** मंगलपना **(दृष्टं)** देखा गया है।

भावार्थ- हे भगवान्! लौकिक मनुष्य रागी-द्वेषी जीवों को भी 'देव' शब्द से व्यवहार करते हैं, सो सिर्फ लोक व्यवहार से ही किसी बात की सत्यता नहीं होती क्योंकि लोक में कितनी ही बातों का उल्टा व्यवहार होता है।

जैसे कि जब दीपक बुझ जाता है, तब लोग कहते हैं, दीपक 'बढ़ गया' और जब घड़ा फूट जाता है, तब लोग कहने लगते हैं कि घड़े का कल्याण हो गया।

काव्य २८ पर प्रवचन

अब, कहते हैं कि वे वक्ता अज्ञानी हैं, जो वाक्चातुर्य अर्थात् वचन की चतुराई से आत्मा को तोड़ डालनेवाले है। अर्थात् राग और पुण्य की क्रिया से आत्मा को लाभ मनवाते हैं और सकषायी जीवों को स्वयं देव मानते हैं तथा दूसरों से मनवाते हैं।

व्यवहार के बिना निश्चय नहीं होता, निमित्त के बिना उपादान का कार्य नहीं होता, शुभराग करते-करते धर्म होता है– इस प्रकार की समस्त बातों का निज

वाक्चातुर्य द्वारा प्रतिपादन करके अज्ञानीजन दूसरों को दिग्भ्रमित करते हैं।

लौकिकजन तो होते ही ऐसे हैं। वे दीपक बुझ जाने पर कहते हैं कि 'दीपक बढ़ गया।' देखो ! कैसी विपरीतता है? पुराने जमाने में ब्राह्मण लोग घर-घर जाकर आटा मांगते थे। यदि किसी के घर में आटा खत्म हो गया हो तो 'खत्म हो गया'– ऐसा न कहकर वे यूं कहते थे कि 'आटा बढ़ गया' देखो ! यह विपरीतता! घर में घी समाप्त हो गया हो तो कहते हैं – कि 'घी बहुत है, लेते आना' क्योंकि यदि 'घी नहीं है' – ऐसा कहें तो अपशकुन हो जाता है।

इसी प्रकार अज्ञानी जीव शुभराग की क्रिया करनेवालों को धर्मात्मा मानते हैं, जड़ की क्रिया से लाभ हानि मानते हैं। अरे ! यह सब लोगों की मिथ्या भ्रान्तियाँ हैं। लौकिक में घड़ा फूट जाए तो कल्याण मानते हैं। धर्म में भी इसी प्रकार की विपरीत मान्यतायें अज्ञानियों में पायी जाती हैं।

कवि ने भगवान ऋषभदेव के मन्दिर में प्रतिमा के सन्मुख ही स्तुति प्रारम्भ की है; अतः भगवान के सन्मुख देखकर वे कहते हैं कि हे प्रभु! हे नाथ! लौकिक जन तो रागी द्वेषी जीवों को भी 'देव' शब्द से सम्बोधित करते हैं – पहिचानते हैं, किन्तु उन लोगों के कहने मात्र से ही उन रागी-द्वेषी जीवों को देव नहीं माना जा सकता क्योंकि लोग तो दीपक के बुझने को भी 'दीपक बढ़ना' कहते हैं, घड़े के फूटने पर 'कल्याण हुआ' कहते हैं। अतः ऐसे अज्ञानी लोगों की मिथ्या बातों पर श्रद्धा नहीं की जा सकती।

शास्त्रों में कहीं निमित्त की मुख्यता से व्यवहारनय द्वारा उपचरित निरूपण किया गया हो तो वहाँ वाक्चातुर्ययुक्त अज्ञानी जीव, सम्यग्ज्ञान रहित जीवों के उस उपचरित कथन को ही सत्यार्थ स्वरूप बतलाते हैं।

द्रव्यलिंगी मुनि को शुक्ल लेश्यारूप इतने उज्ज्वल शुभ परिणाम होते हैं कि इन्द्राणी डिगाने आवे तो भी नहीं डिगे और शरीर के खण्ड-खण्ड करने पर क्रोध न करे, आँख की कोर तक लाल न हो; इतने मन्दराग में भी जो जीव धर्म मानते हैं तो उनका मानना उसी प्रकार मिथ्या है, जिस प्रकार दीपक के बुझने पर उसे बढ़ा हुआ कहना।

यद्यपि राग में धर्म मानने से आत्मा का ज्ञानदीपक बुझ जाता है, तथापि अज्ञानी जन ऐसा मानते हैं कि 'हम धर्म में आगे बढ़ गये'। वस्तुतः यह उनका अज्ञान ही है। **(क्रमशः)**

नय रहस्य

(नयों को समझने के लिए उपयोगी)

गतांक से आगे ....

व्यवहारनय के चारों भेदों की कथंचित् सत्यार्थता

व्यवहारनय का स्वरूप स्पष्ट करते समय उसे अभूतार्थ अविद्यमान कहा गया है, अतः उसके चारों ही भेद निश्चय की अपेक्षा अभूतार्थ हैं। फिर भी प्रत्येक भेद अपने विषय की अपेक्षा कथंचित् सत्यार्थ भी है, परन्तु सभी के भेदों की सत्यार्थता एक जैसी नहीं होती। यहाँ स्थूलता से सूक्ष्मता के आधार पर जिस क्रम से उसके भेदों का वर्णन किया गया है, उसी क्रम से उनकी सत्यार्थता भी वस्तु स्वरूप के उत्तरोत्तर अधिक निकट होती है। यहाँ किसी संस्थान के कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों को दिये गये अधिकारों के माध्यम से यह बात स्पष्ट की जा रही है।

किसी संस्थान के कार्यरत कर्मचारियों को मुख्यतया चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है। उच्च अधिकारी, सामान्य अधिकारी, लिपिक, भृत्य (चपरासी)। ये सभी कर्मचारी अपनी-अपनी अधिकार सीमा में काम करते हैं, परन्तु सभी की बातों में एक सा वजन नहीं होता। प्रत्येक की बात का वजन उसके अधिकारों के अनुपात में होता है तथा उससे उच्च अधिकारी के सामने वह निरस्त हो जाता है।

कार्यालय के चपरासी से पूछे बिना भीतर नहीं जा सकते, अधिकारी से नहीं मिल सकते, अतः उसका भी अपना वजन है, परन्तु उसे क्लर्क की बात मानना पड़ती है। क्लर्क उसे आदेश दे सकता है परन्तु वह क्लर्क को आदेश नहीं दे सकता। इसी प्रकार क्लर्क को विभागीय अधिकारी का , तथा विभागीय अधिकारी को सर्वोच्च अधिकारी की बात मानना होती है, वे अपने उच्च अधिकारी को आदेश नहीं दे सकते। सर्वोच्च अधिकारी की बात को कोई नहीं टाल सकता परन्तु वह स्वयं अपने निर्णय बदल सकता है।

यही स्थिति व्यवहार नय के चारों भेदों की है।

उपचरित असद्भूत व्यवहारनय यद्यपि सबसे स्थूल व्यवहार है, तथापि लौकिक व्यवस्था में वही बलवान है।

उसका उल्लंघन लौकिक दृष्टि से भी अपराध माना जाता है। यह मकान मेरा है, स्त्री पुत्रादिक मेरे हैं – ऐसा कहनेवाले उपचरित असद्भूत व्यवहार के आधार से ही प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सम्पत्ति, रिश्ते-नाते, कर्त्तव्य और अधिकार सुनिश्चित होते हैं। यदि इसका वजन स्वीकार न किया जाये तो सारी लौकिक व्यवस्था भी छिन्न-भिन्न हो जायेगी। न केवल लौकिक व्यवस्था, अपितु पंचेन्द्रिय विषयों के ग्रहण त्याग का कथन करनेवाला चरणानुयोग और ६३ शलाका पुरुषों के अनेक भवों का वर्णन करनेवाले प्रथमानुयोग का आधार भी समाप्त हो जायेगा।

उपचरित असद्भूत् व्यवहार के कथनों में लौकिक और पौराणिक यथार्थता होने पर भी अनुपचरित असद्भूत व्यवहार के कथनों का वजन अधिक होने से उसके सामने वह फीका हो जाता है। हम देह के साथ जैसा अपनापन अनुभव करते हैं, वैसा मकान आदि में नहीं। मकान में आग लगने पर यदि सुरक्षित बाहर निकल आयें तो अपने को बहुत भाग्यशाली समझते हैं। इसी प्रकार द्रव्यकर्मों के साथ जैसा पक्का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है वैसा स्त्री-पुत्रादि के साथ नहीं। साता वेदनीय का उदय होने पर सभी नोकर्म अच्छे लगते हैं तथा असाता वेदनीय का उदय होने पर बुरे लगने लगते हैं। कहा भी है –

जल से गले रवि से जलता,
कमल जगह छूट जाने से।
मित्र अरि हो जायें जगत में,
अशुभ कर्म के आने से॥

इस प्रकार अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय के प्रतिपादन, उपचरित असद्भूत व्यवहारनय के कथनों से अधिक वजनदार होते हैं।

देह और कर्मों के साथ आत्मा का एकक्षेत्रावगाही सम्बन्ध होने पर भी वे आत्मा के द्रव्य-गुण-पर्यायों से अत्यन्त भिन्न ही हैं; इसलिए वास्तव में आत्मा उनका कर्ता-भोक्ता नहीं है। परन्तु रागादि विकारी भाव तो आत्मा की पर्याय में ही होते हैं, अतः यह जीव रागादिभावों से ही दुःखी होता है। धनादि के प्रति तीव्र राग से पीड़ित होने पर यह जीव शारीरिक कष्टों को सहकर भी धन प्राप्ति होने पर आनन्दित होता है और देह के प्रति राग नष्ट हो गया होने से देह अग्नि में जलती होने पर भी मुनिराज अतीन्द्रिय आनन्द भोगते हुए अर्हन्त अवस्था प्राप्त कर लेते हैं। अतः देह की अपेक्षा राग आत्मा के अत्यन्त निकट हैं। निकट क्या? आत्मा के ही प्रदेशों और पर्यायों

में है, इसीलिये तो रागी दुःखी और वीतरागी सुखी होते हैं।

इसी प्रकार पदार्थों का ज्ञान, इन्द्रियों से नहीं मतिज्ञानादि से होता है। आत्मा मतिज्ञानादिरूप परिणमित होता है। उन मतिज्ञानादिक में चेतना अर्थात् जीव ही परिणमता है। अतः रागादि और मतिज्ञानादि क्षयोपशमज्ञान को आत्मा का कहनेवाला उपचरित सद्भूत व्यवहारनय अपने पूर्ववर्ती अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय की अपेक्षा अधिक वजनदार है।

रागादि विकार तथा क्षयोपशमज्ञान आत्मा की अवस्थायें होने पर भी आत्मा का स्वभाव नहीं हैं, अपितु स्वभाव से विरुद्ध हैं, दुःखरूप हैं और विनाशीक हैं। अतः आत्मा के पूर्ण स्वभाव की द्योतक पूर्ण शुद्ध पर्यायों को बतानेवाला तथा गुणभेद से आत्मा तक पहुँचानेवाला अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय अपने पूर्ववर्ती उपचरित सद्भूत व्यवहारनय से अधिक वजनदार है। औदयिक और क्षायोपशमिक भाव सादि सान्त हैं और क्षायिक भाव सादि अनन्त हैं तथा गुणभेद तो आत्मा के अनन्त धर्मों में से एक धर्म अर्थात् आत्मा का स्वभाव ही है, इसलिए अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय हमारे लक्ष्यबिन्दु भगवान आत्मा के अधिक निकट हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि व्यवहारनय के चारों भेदों में उत्तरोत्तर अधिक वजन है। यहाँ व्यवहारनय के भेद-प्रभेदों का प्रकरण है, इसलिए अनुपचरित सद्भूत व्यवहार के निषेधक परम शुद्ध निश्चयनय की चर्चा नहीं की जा रही है। निश्चयनय के भेद-प्रभेदों के प्रकरण में उसका कथन किया जा चुका है।

व्यवहारनय के ये चारों भेद आत्मा के संयोगों, संयोगीभावों तथा गुण-पर्याय के भेदों के माध्यम से आतमा को समझाने के प्रयोजन से किये गये हैं। अतः उनका वजन भी अपने-अपने प्रयोजन की मर्यादा में समझना चाहिये। यदि उन पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया तो उन्हीं को परमार्थ मानने का प्रसंग आने से वे नयाभास हो जायेंगे। ऐसी स्थिति न आए इसीलिए निश्चयनय के द्वारा व्यवहारनय का निषेध आवश्यक है।

यहाँ चारों भेदों के वजन अर्थात् वस्तु स्वरूप से उनकी निकटता की तुलनात्मक समीक्षा की गई है। किसी भी भेद को अपने पूर्ववर्ती भेद का निषेधक नहीं कहा गया है, क्योंकि निषेधक लक्षण निश्चयनय का है। अतः प्रत्येक भेद अपने उत्तरवर्ती भेद का प्रतिपादक तो कहा जायेगा परन्तु पूर्ववर्ती भेद का

निषेधक कहने से वह व्यवहारनय का भेद न रहकर निश्चयनयत्व को प्राप्त हो जायेगा। प्रतिपाद्य-प्रतिपादक और निषेध्य-निषेधक की चर्चा पहले की जा चुकी है, फिर भी निश्चयनय का कौन सा भेद, व्यवहारनय के किस भेद का निषेध करता है – यह बात निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाती है।

यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि समयसार कलश-१६८ में परद्रव्य आत्मा को सुखी-दुःखी करते है। –इसका निषेध करने के लिए आत्मा के सुख-दुःख, जीवन-मरण निश्चय से अपने कर्मोदय के अनुसार होते हैं – ऐसा कहा है, परन्तु निश्चयनय के भेदों में ऐसा कोई भेद नहीं, जो आत्मा को कर्मोदय से सुखी-दुःखी कहे। इसी प्रकार आत्मा में रागादि हैं ऐसा उपचरित सद्भूत व्यवहार से कहा गया है; परन्तु आत्मा सम्यग्दर्शनादि एक देश निर्मल पर्यायों का कर्त्ता है – यह कथन एकदेश शुद्ध निश्चयनय का माना गया है, फिर भी इन निर्मल पर्यायों से कर्ता-कर्म का भेद बतानेवाला व्यवहारनय का कोई पृथक् भेद नहीं कहा गया है। उपचरित सद्भूत व्यवहारनय से मतिज्ञानादि को जीव का कहा गया है, परन्तु वहाँ क्षायोपशमिक मतिज्ञान की बात है, सम्यग्ज्ञान की नहीं।

इस तथ्य से यह समझना चाहिए कि अनेक प्रसंगों में मात्र निषेधक होने से निश्चयनय तथा अभेद में भेद करने से व्यवहार घटित किये गये हैं, प्रत्येक कथन किसी न किसी भेद-प्रभेद में घटित किया ही जाये ऐसा आवश्यक नहीं है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ २९ का शेष)

प्रति पल आता रहे – यही करने योग्य है। प्रत्येक आत्मा में प्रभुत्व शक्ति है वह स्वयं परिपूर्ण है। ज्ञान के भण्डार का आनन्द यदि लेना है तो हमें अपने चैतन्य स्वभाव को पहचानना होगा। हमें अपने पुरुषार्थ से सदा इसका स्मरण रखना होगा। अनन्त गुणों का यह आत्मा भंडार है- निरन्तर प्रकाशमान, सुधा का सरोवर पर पदार्थों की दौड़ में महा आकुलमय है। आप इस चैतन्य ज्योति को जगाने में प्रयत्नशील हैं। हमें गर्व है। भविष्य में भी अपने प्रयासों में लगे रहें।

-हीराचन्द बोहरा, BA, LLB जयपुर

जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व विकास

गतांक से आगे...

३.२ नित्य कर्म नियमित व समय पर करो-

हर व्यक्ति को कुछ कार्य नियमित रूप से प्रतिदिन करने होते हैं उनमें विशेष सावधानी व विवेक आवश्यक है। स्वस्थ रहने के लिये भी इन पर समुचित ध्यान देना चाहिए।

१. प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठो।

सूर्योदय से पूर्व के ४८ मिनिट (२ घड़ी) का समय ब्रह्म मुहूर्त कहलाता है। यह सरस्वती (विद्या की देवी/ जिनवाणी) की आरधना का काल होता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाले दिन भर स्वस्थ, प्रसन्न, सक्रिय व स्फूर्ति सहित रहते हैं।

२. प्रातः उठते ही अपने इष्ट देव का स्मरण करो – उनसे प्रार्थना करो कि मुझे श्रेष्ठ बुद्धि व बल प्रदान करे जिससे मेरा सारा दिन अच्छे कार्यों में व्यतीत हो। जैन परिवारों में प्रातः उठते ही ९ बार णमोकार मंत्र का जाप करने की परम्परा है।

३. उसके पश्चात् शौच, मंजन, स्नान आदि से निवृत्त हो। प्रातःकाल उठते ही पानी पीने की आदत डालो, प्रातःकाल पानी पीनेवाला रोग मुक्त रहता है। स्नान करते समय शरीर के सभी अंगों की सफाई ठीक से करो। दांतों की सफाई के लिए मंजन के साथ खूब अच्छी तरह कुल्ला करना आवश्यक है। आंखों की सफाई के लिए आंखों पर ठंडे पानी के छींटे कम से कम २० बार दें। नियमित रूप से नाखून साफ रखें। ऐसे अंग जहाँ ज्यादा मैल जमता है जैसे कोहनी, पैर आदि का मैल मोटे कपड़े, ब्रुश या पत्थर से रगड़कर साफ करो। स्नान करने में साफ छने हुए पानी का उपयोग करो। पानी आवश्यकतानुसार खर्च करो-शरीर के विभिन्न अंगों की सफाई पर विशेष ध्यान दो।

४. भगवान की आराधना करो – स्नान करने के पश्चात् प्रतिदिन भगवान की आराधना करना चाहिए। भगवान की आराधना का उपयुक्त स्थान मंदिर है। अतः रोजाना मंदिर जाने का नियम लो। मंदिर जाते समय पूजा-अर्चना हेतु सामग्री घर से लेकर जावें। साफ किये हुये आखे (पूरे) चावल (अक्षत) लोंग-बादाम लेकर जावें। निःसहि-निःसहि बोलते हुये मंदिर में प्रवेश करें। भगवान की तीन प्रदक्षिणा करते हुये भावना भायें

कि हमारा ज्ञान, प्रतीति, और आचरण सच्चा हो। सच्चा अर्थात् सुख प्रदान करनेवाला जो हमें सुखी कर सके।

इसके पश्चात् दर्शन स्तुति भाव पूर्वक उसके शब्दों का अर्थ समझते हुये बोलें। कवियों ने अनेक स्तुतियाँ बनाई हैं। कविवर बुधजन रचित स्तुति बहुत सरल व स्पष्ट भाववाली है –

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर,
भविजन की अब पूरो आश।
ज्ञान भानु का उदय करो मम,
मिथ्यातम का होय विनाश॥
जीवों की हम करुणा पालें,
झूठ वचन नहीं कहें कदा।
परधन कबहूं, न हरहूं स्वामी,
ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा॥
तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा,
तोष सुधा नित पिया करें।
श्री जिनधर्म हमारा प्यारा,
तिसकी सेवा किया करें॥
दूर भगावें बुरी रीतियां,
सुखद रीति का करें प्रचार।
मेल मिलाप बढ़ावें हम सब,
धर्मोन्नति का करें प्रसार॥
सुख दुःख में हम समता धारें,
रहें अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें,
वृद्धि करें निज आतम बल॥
अष्ट कर्म जो दुःख हेतु हैं,
तिनके क्षय का करें उपाय।
नाम आपका जपें निरन्तर,
विघ्न शोक सब ही टल जाय॥
आतम शुद्ध हमारा होवे,
पाप मैल नहीं चढ़े कदा।
विद्या की हो उन्नति हम में,
धर्म ज्ञान हू बढ़े सदा॥
हाथ जोड़कर शीश नवावें,
तुम को भविजन खड़े-खड़े।
यह सब पूरो आश हमारी,
चरण शरण में आन पड़े॥

समय हो तो दर्शन करने के बाद पूजन की पुस्तकों में बतायी गई विधि से पूजन करें।

३.३ स्वाध्याय नित्य करें -

ऐसी पुस्तकों का अध्ययन, मनन व चिन्तन स्वाध्याय है, जिससे हमें सुख मिले अर्थात् हमारी आकुलता व्याकुलता घटे और महान लक्ष्यों की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले। महापुरुषों द्वारा लिखी पुस्तकों में महान विचार मिलते हैं। अच्छे विचार हमें सही ढंग से सोचने की शक्ति देते हैं। अच्छे लक्ष्यों को बनाने व उन्हें प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं। हमारे आचार्यों ने अलग-अलग सरल शैलियों

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

अकलंक ज्ञानवर्धनी ३५

प्र.१ कितने परमेष्ठी संसारी हैं?
प्र.२ गणधर कौन से परमेष्ठी हैं ?
प्र.३ कितने तीर्थंकरों के चिह्न पक्षी हैं?
प्र.४ कितने तीर्थंकरों के चिह्न एक इन्द्रिय हैं?
प्र.५ कितने तीर्थंकरों के चिह्न दो इन्द्रिय हैं ?
प्र.६ कितने तीर्थंकरों के चिह्न जलचर जीव हैं ?
प्र.७ कितने तीर्थंकरों के चिह्न अजीव हैं?
प्र.८ कितने तीर्थंकरों का रंग हरा है?
प्र.९ लाल रंग वाले कौन से तीर्थंकर हैं?
प्र.१० उपसर्ग विजेता तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?
प्र.११ चौबीस तीर्थंकरों के कुल कितने गणधर हैं ?
प्र.१२ किस तीर्थंकर के काल में महा भरत हुआ था ?
प्र.१३ किस तीर्थंकर के काल में १७० तीर्थंकर विद्यमान थे ?
प्र.१४ राम-रावण किस तीर्थंकर के काल में हुए ?
प्र.१५ भरतक्षेत्र में एक साथ (एक समय में) कितने तीर्थंकर हो सकते हैं ?- मनोरमा ध्रुवधाम

उक्त ज्ञानवर्धनी के उत्तर खोजकर दिनांक १५ सितम्बर तक ध्रुवधाम, पो. कूपड़ा, जिला बांसवाड़ा के पते पर भिजवावें। चयनित ५ प्रतिभागियों को १००-१०० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

अकलंक ज्ञानवर्धनी ३२ के सही उत्तर

१. कुंडलपुर २. चैत्र शुक्ला त्रयोदशी ३. तीस वर्ष ४. जाति स्मरण ५. वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्धमान, महावीर ६. शाल वृक्ष ७. बारह वर्ष ८. ईसा पूर्व ५९९, ९. इन्द्रभूति गौतम, चंदना १०. ६६ दिन बाद श्रावण कृष्ण एकम् ११. कविवर भागचन्दजी १२. ७०० केवली १३. श्री महावीर स्वामी १४. एकाकी १५. कोटा राजस्थान।

अकलंक ज्ञानवर्धनी ३२ के विजेता-

मात्र ३ ही सही उत्तर प्राप्त हुए हैं-

१. अक्षय चव्हाण २. अशोक कुमार खतौली, ३. अनुप्रेक्षा जैन। सभी को १००-१०० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

अकलंक ज्ञानवर्धनी ३३ के सही उत्तर

१. श्रीमती उजमबा, श्री मोतीचन्द २. उमराला ३. परमागम मन्दिर सोनगढ़

४. ३७ ग्रन्थ ५. डॉ. मुकेश तन्मय, डॉ. ममता जैन ६. कहान क्रमबद्धकथा ७. चैत्रशुक्ला त्रयोदशी महावीर जयन्ती ८. वैशाख शुक्ल दूज ९. १२५वीं जन्म जयन्ती १०. समयसार और कार्तिकेय अनुप्रेक्षा ११. सम्मेदशिखर, द्रोणगिरि, गजपंथा, सोनागिरि १२. वि. सं. १९७८ १३. नैरोबी १४. समयसार १५. श्री निहालचन्द सोगानी।

अकलंक ज्ञानवर्धनी ३३ के विजेता-

१. प्रियंका जैन २. मानसी जैन घुवारा ३. भाविका जैन ४. करिश्मा जैन ५. श्रद्धा जैन, जैन बालिका संस्कार संस्थान, उदयपुर।

सभी को डॉ. वि. धनकुमार जैन, कोटा द्वारा १००-१०० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के समस्त ऑडियो-वीडियो प्रवचन, साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –

वेबसाइट - vitragvani.com

सम्पर्क सूत्र – श्री कुंद-कुंद कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

PH : 022-26130820, 26104912

Email Address : info@vitragvani.com,

कथा जगत-

भूल स्वयं के वैभव को...

एक लक्षाधीश सेठ के यहाँ एक मात्र उसका लाड़ला पुत्र था जो अधिक लाड़ प्यार के कारण स्वच्छंद प्रवृत्ति का बनकर अनेक दुर्व्यसनों में फंस गया। जुआ, शराब, अभक्ष्य भक्षण आदि ऐसे व्यसन थे, जिनमें फंसकर वह अपने पिता की कमाई बर्बाद करने लगा।

सेठजी अन्तिम समय में मरण के सन्मुख हो रहे थे। उन्होंने सोचा कि यदि इस व्यसनी लड़के को सभी संपत्ति बता देंगे तो यह जुआ आदि व्यसनों में थोड़े ही दिनों में बर्बाद कर देगा। अतः थोड़ी सी संपत्ति तो पुत्र को समर्पित कर दी किन्तु बहुत सी संपत्ति अपने विश्वस्त मित्र को बताकर अपने ही मकान की जमीन में गाड़ कर रख दी।

सेठजी तो परलोकवास कर गये, किन्तु उस सेठ के व्यसनी लड़के ने जुआ शराब आदि में अपनी सब संपत्ति स्वाहा कर दी। छोटे-छोटे बच्चे भूख से तड़पने लगे। जुआरी शराबी को कोई भी एक पैसे का माल भी उधार देने को तैयार नहीं होता, क्योंकि उससे वापिस मिलने की किसी को आशा तो थी ही नहीं।

एक दिन उसकी पत्नी ने कहा- कि बच्चे भूखे तड़फ रहे हैं तो भोजन का तो प्रबंध करो। बच्चों को भूखे तड़फते हुए तो नहीं देखा जाता; और कहीं ना जा सको तो पिताजी के मित्र से ही कुछ सहायता मांग लो। सेठ पुत्र को यह सलाह समझ में आ गई।

वह पिताजी के परम मित्र के पास गया और कहा – ताऊजी बच्चे भूखों मर रहे हैं, कुछ उपाय बतलाइये जिससे बच्चों के पेट में रोटी तो जा सके। ताऊजी ने कहा – बेटा, इतने बड़े सेठ का लड़का होकर भूखों मरने की बात करता है, बड़े अचंभे की बात है।

सेठपुत्र बोला – ताऊजी, अपने ही पाप की सजा भोग रहा हूँ। अब तो ये सब व्यसन छोड़ रहा हूँ, किन्तु व्यापार धंधे का कुछ उपाय नहीं समझ में आ रहा है।

ताऊजी ने कहा – बेटा दुर्गुण छोड़ दो तो आज भी तुम लखपति हो।

लड़का बोला – ताऊजी, क्यों मुझ पर व्यंग्य कस रहे हो। यहाँ तो रोटियों के लाले पड़े हैं और आप लखपति बता रहे हो। आप ही कुछ सहायता करिये, अन्यथा बच्चे भूखों मर जायेंगे।

ताऊजी ने कहा- बेटा तुम्हारे घर में तुम्हारी ही लाखों की संपत्ति जमीन में गड़ी हुई है। अपने पिता की तरह सज्जन बन जाओ और इस अटूट संपत्ति का भोग करो।

अब देखिये, लाखों की संपत्ति उसके घर में रखी होकर भी उसका पता ना होने से सेठपुत्र भिखारी बना हुआ था, किन्तु उसका पता चलते ही वह धनी बन गया। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी सुख के सागर से परिपूर्ण होने पर भी, उसका ज्ञान न होने से दीन-हीन और दुःखी बना हुआ है। एक बार भी यदि उसे अपने वैभव का पता चल जाय तो इसकी दीनता दरिद्रता और दुःख समाप्त हो जाय। ●

सूचना/निवेदन

हम 'ध्रुवधाम' के आगामी अंकों के मुख्य पृष्ठ पर पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में या उनके प्रभावना योग में निर्मित जिनमन्दिर/स्वाध्याय भवन के चित्र उनके संक्षिप्त परिचय के साथ प्रकाशित कर रहें हैं। अतः आपसे निवेदन है कि आप प्रतिष्ठा तिथि, प्रतिष्ठाचार्य, मूलनायक, अन्य सुविधायें/विशेषतायें, सम्पर्क सूत्र संबंधी जानकारी कृपया शीघ्र भिजवाने का श्रम करें। – प्रबंध संपादक, 'ध्रुवधाम' पोष्ट-कूपड़ा, जिला बांसवाड़ा (राज.) email-dhruvraj1008@rediffmail.com

नास्तिकता क्यों ?

विज्ञान के इस उन्नत युग में नास्तिकता क्यों ? रह-रह कर यह प्रश्न प्रत्येक मुमुक्षु के हृदय में उत्पन्न होता है। यद्यपि इस प्रश्न के उत्तर का अनुसन्धान व समस्या का प्रतिकार, दोनों में ही विद्वज्जन व साधुवर्ग अपना पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु न जाने क्यों सर्व पुरुषार्थ विफल जा रहा है। सम्भवतः इसलिए कि धर्म इतना अधिक रूढ़िग्रस्त हो गया है कि इसका असली स्वरूप भी लुप्त हो चुका है। पूजा, व्रत, उपवास, शुद्ध भोजन, दूसरों को उपदेश देना इत्यादि क्रियाओं तक ही सीमित होकर रह गया है। परन्तु इन क्रियाओं के प्रयोजन की ओर कितनों की दृष्टि जाती है, यह भगवान ही ठीक जानते हैं।

वीतराग देव के दर्शन या पूजन का प्रयोजन क्या है ? क्या आँखों से भगवान की सुन्दरता को देखना अथवा कुछ पाठ स्तुति आदि का मुँह से उच्चारण करना अथवा कुछ सामग्री भगवान के समक्ष अर्पण करना दर्शन/पूजन है ? क्या भगवान स्तुति आदि के इच्छुक हैं अथवा सामग्री के भूखे हैं ? आखिर क्या भावना लेकर भगवान के समक्ष जाते हैं ? धन प्राप्ति की या पुत्र प्राप्ति की या नौकरी प्राप्ति की या परीक्षा में उत्तीण होने की ?

अरे प्रभो ! भगवान को क्यों व्यर्थ में इस प्रपंच में फंसाने का प्रयत्न करते हो। ये सब चीजें उनके पास हैं ही कहाँ? उनके पास तो है वीतरागता, अंतरंग की परम उज्ज्वलता, परम शांति व ज्ञान की असीम व्यापकता। जो कुछ उनके पास है उसकी भावना न करके अपने लौकिक स्वार्थों की भावना करने से क्या लाभ होने वाला है। होता है उल्टा स्वार्थ पोषण, जिसके फलस्वरूप होती है ब्लैक मार्केटिंग आदि दुर्व्यसनों में प्रवृत्ति, अभिमानपूर्वक क्रोधादि कषायों की जागृति अर्थात् चित्त की कलुषता। इसलिए तो बाहर में प्रसिद्ध हो गया है कि जितने धर्मात्मा उतने ही पापी। धर्म पर विश्वास हो तो कैसे ?

शुद्ध भोजन किसलिए किया जाता है ? क्या शुद्ध भोजन करने मात्र के लिए अथवा 'मैं शुद्ध भोजी हूँ' ऐसा अभिमान करने के लिए ? सात्विक भावों की प्राप्ति की परवाह न करके केवल शुद्ध भोजन को धर्म मानना, किस बुद्धि की उपज है? यह भगवान ही ठीक जानते हैं। अरे प्रभो! शुद्ध भोजन के बहाने राजसिक व पौष्टिक भोजन करना, शुद्ध भोजीपने के अहंकार पूर्वक क्रोधादि कषायों को पुष्ट करना ही यदि इसका प्रयोजन है, तब तो शुद्ध की अपेक्षा अशुद्ध आहार ही ठीक है। ऐसा सोना किस काम का जो कानों को काट डाले। परन्तु शुद्ध भोजीवर्ग में अधिकांश भाग ऐसा ही देखने में आता है। धर्म पर आस्था हो तो कैसे हो ? **(शेष २७ पर)**

नीति

परधन परतिय ना चिते, संतोषामृत राचि।
ते सुखिया संसार में, तिनकों भय ना कदाचि॥१॥

रंक भूप पदवी लहै, मूरख सुत विद्वान्।
अंधा पावै विपुल धन, गिनैं तृना ज्यों आन॥२॥

विद्या विषम कुशिष्य कों, विष कुपथी को व्याधि।
तरुनि विष सम वृद्ध को, दारिद प्रीति असाधि॥३॥

सुचि-असुचि नाहिं गिने, न न्याय-अन्याय।
पाप पुण्य को ना गिनै, भूसा मिलै सु खाय॥४॥

एक मात के सुत भये, एक मते नहिं कोय।
जैसे कांटे बैर के, बांके सीधे होय॥५॥

भावार्थ – १. जो पराये धन एवं पराई स्त्री की ओर रागभाव से नहीं देखते और संतोष रूपी अमृतपान करते हैं, वे ही संसार में सुखी हैं। उनको कभी किसी का भय नहीं होता।

२. जनम के भिखारी के लिए राजपद, मूर्ख व्यक्ति के लिये विद्वान् बेटा, अन्धे को अधिक धन मिल जाये तो उसके लिए उसकी महत्ता उतनी ही है, जितनी अन्य लोगों के लिए घास की महत्ता है।

३. खोटे शिष्य को दी गई विद्या विष के समान है। रोगी को कुपथ्य सेवन विष के समान है। दरिद्र/वृद्ध व्यक्ति को स्त्री का प्रेम विष के समान है।

४. पवित्र या अपवित्र, न्याय या अन्याय पूर्ण, पाप है या पुण्य, आदि बातों का विकल्प न करते हुये जो कुछ रूखा-सूखा मिले उसे ही खाकर गड्ढ़ा भर लेवे।

५. एक ही माता के उदर से पैदा हुए दो बालकों (भाई-भाई) के विचार एक समान नहीं होते हैं। जैसे बेर के कांटे एक समान नहीं होते अर्थात् कोई बांका होता है और कोई सीधा होता है।

शुद्ध चिद्रूपोऽहम्

धर्मानुरागी बन्धुवर,

सहजतत्त्व का सहजपने अनुभव करें।

संयोग अनित्य हों तो भले हों, पर स्वभाव तो अनित्य नहीं है। अहो ! नित्य शुद्ध, चिदानन्दमय सम्पदाओं की खान स्वरूप भगवान आत्मा के रहते हुए मुझे संयोग से क्या? संयोग के काल में भी, ज्ञान सुख की प्राप्ति तो स्वभाव के आश्रयपूर्वक, निरपेक्षपने होती है। अहो! मेरे स्वरूप में संयोग का सदाकाल वियोग (अभाव) है। संयोग शब्द ही भिन्नता का सूचक है।

भाई ! निमित्त का चमत्कार (कर्तृत्व) देखना तो मोह दृष्टि है। वह तो वस्तु का, सहजपने होनेवाला परिणमन मात्र है। देखने योग्य चैतन्य का चमत्कार ही है, जो सदा एकरूप है, परम आनन्द रूप है, अनुपम है। ज्ञानमात्र होते हुए भी अनेकान्तमय है, सहज है, स्वाधीन है। अधिक क्या कहें? वचनातीत है, अचिन्त्य है, बस है सो है, वह तो वही है।

देखो ! भाग्यशाली वे नहीं, जिन्हें निमित्त मिले हैं, किन्तु धन्य वे हैं, जिन्हें निमित्त की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती तथा मिलने के काल में भी स्वभाव की अपेक्षा पूर्वक सहज उपेक्षा ही वर्तती है।

वस्तुतः आत्मा को, आत्मा ही उपादेय है, यही बात परम सत्य है। संयोगों की क्षणभंगुरता, यदि वास्तव में भासित होवे तो नित्य स्वभाव के उग्र अवलम्बनपूर्वक, वैराग्य जाग्रत होता है। वह जीव, संयोग मुझे छोड़े, उससे पहले ही मुझे संयोग को छोड़ देना श्रेयस्कर है – ऐसा विचार करता हुआ ज्ञान आनन्दमय शुद्धात्मा की ओर अग्रसर होता है।

संयोगों में एकत्वपूर्वक संयोगों को जानना तो दुःख का कारणरूप अज्ञान ही है। स्वभाव के लक्ष्यपूर्वक संयोग का भिन्नपने ज्ञान होना ही सम्यग्ज्ञान है। विशेष क्या? निरन्तर स्वानुभव का पुरुषार्थ रखना।

– स्वानुभव पत्रावली से साभार

धन्य मुनिराज हमारे हैं...

जगत जीव जीवन्त चराचर,
सबके हित सबको सुखदानी।
तिन्हें देख दुर्वचन कहें खल,
पाखण्डी ठग यह अभिमानी॥
मारो याहि पकड़ पापी को,
तपसी भेष चोर है छानी।
ऐसे वचन बाण की बेला,
क्षमा ढ़ाल ओढ़ैं मुनि ज्ञानी॥

सुखी जीवन जीने का उपाय

कहा घड़े से एक रोज, रस्सी ने गले लिपटकर।
गहन कुए में साथ दिया है, हमने तुमने मिलकर॥
बोला घड़ा बहिन रस्सी से, तुम आयी हो बटकर।
आज घड़ा हम जीवन पाये, आये आग में तपकर॥
यह दुनिया कितनी स्वारथ की, मैं जल लायी मर पचकर।
सबने अपनी प्यास बुझाई, देखा नहीं पलटकर॥
काम करो निष्काम भाव से, मन में समता धरकर।
अगर सुखी रहना है बहिना, रहो सभी से हटकर॥
देखो ! वस्तु स्वरूप समझ बिन, चैन न पाया पलभर।
व्याकुल का तो फल व्याकुलता, रहना ज्ञाता बनकर॥
पर की अगर अपेक्षा की तो, मिले उपेक्षा अक्सर।
कार्य करो दो श्रेय और को, कहा घड़े ने हंसकर॥

-सन्तोष जैन सहज, गुरसरांय

हे भविजन ! ध्यालो आतमराम...

कौन जानता कब हो जाये इस जीवन की शाम॥टेक॥
जग में अपना कोई नहीं है, परिजन तन या दाम॥
आयु अंत पर सब छूटेगा जल जावेगी चाम॥१॥
यह संसार दुःखों की अटवी यहाँ नहीं आराम।
शुद्धात्म की करो साधना रहो सदा निष्काम॥२॥
सिद्ध समान सदा पद मेरो कुंदकुंद की वाणी।
ज्ञायक आत्मा ज्ञान दिवाकर स्वयं सिद्ध भगवान॥३॥
मोह राग को छोड़ रे चेतन, निज में करो विश्राम।
शुद्ध-बुद्ध अविनाशी हो तुम, शुद्धातम सुखधाम॥४॥

अजर-अमर अविनाशी आतम, गुण अनन्त की खान।
इसी भावना इसी लक्ष्य से बन जाओ भगवान॥५॥

सिद्धस्वरूपी ममल स्वभावी, आनन्दमयी ध्रुवधाम।
ब्रह्मानन्द में लीन रहो तो, बन जायें सब काम॥६॥

पुण्य उदय से नरभव पाया, करलो निज कल्याण।
निजस्वरूप में रमण करो तुम, पावो मुक्तिधाम॥७॥

प्रस्तुति- हीराचन्द बोहरा, जयपुर

आओ जाने करणानुयोग

प्रश्न १. आवली किसे कहते हैं?

उत्तर- जघन्य युक्त असंख्यात समय समूह को आवली कहते हैं।

प्रश्न २. समय किसे कहते हैं?

उत्तर- एक आकाश के प्रदेश से निकटवर्ती अन्य आकाश के प्रदेश पर्यन्त मंदगति से गमन करते हुए परमाणु के गमन काल को समय कहते हैं। यह व्यवहार काल का सबसे छोटा अंश है।

प्रश्न ३. प्रदेश किसे कहते हैं ?

उत्तर- एक परमाणु से व्याप्त आकाशक्षेत्र को प्रदेश कहते हैं।

- एक प्रदेश में अनंत परमाणुओं को अवगाहन देने की शक्ति है।

प्रश्न ४. अंतर्मुहूर्त किसे कहते हैं?

उत्तर- मुहूर्त में से एक समय कम शेष काल प्रमाण को भिन्न मुहूर्त कहते हैं। उस भिन्न मुहूर्त में से भी एक समय कम शेष काल प्रमाण को अंतर्मुहूर्त कहते हैं; यह उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है।

- जो मुहूर्त के समीप हो, उसे अंतर्मुहूर्त कहते हैं।

- आवली से अधिक और मुहूर्त से कम काल को अंतर्मुहूर्त कहते हैं।

- एक मुहूर्त में ३७७३ श्वास-उच्छवास होते हैं। एक श्वासोच्छवास में असंख्यात आवली होती हैं। एक आवली में एक समय जोड़ने पर जघन्य अंतर्मुहूर्त होता है।

- उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त से एक समय कम और जघन्य से एक समय अधिक ऐसे मध्यम अंतर्मुहूर्त असंख्यात होते हैं।

साभार- गुणस्थान विवेचन

(पृष्ठ १८ का शेष) उपदेश देने की प्रवृत्ति किसलिए है ? क्या दूसरों को समझाने के लिए या अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करके लोगों की प्रशंसा प्राप्त करने के लिए ? अरे भगवन् ! अच्छा होता यदि दूसरों को समझाने से पहले स्वयं समझ लेता। परोपकार के बहाने अपनी लोकेषणा की पुष्टि करना ही यदि इसका प्रयोजन है तब तो शास्त्रज्ञान ही अहित के लिए हुआ। ऐसे शास्त्रज्ञान से क्या लाभ ? पर अधिकतर देखा ऐसा ही जाता है। उपदेशक जो कुछ मुँह से कहता है स्वयं उसके जीवन में उस बात की झांकी दिखाई नहीं देती। धर्म पर श्रद्धा हो तो कैसे हो ?

प्रतिमा का साधुवृत्ति का धारण किसलिए है ? क्या प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए या अपने रूप का प्रदर्शन करने के लिए। अथवा दूसरों पर अपने तप व त्याग का रौब गांठने के लिए या अनेकों प्रकार के अव्यवहार्य त्यागादि करके गृहस्थ लोगों पर भार डालने के लिए ? तप व त्यागादि के अभिमानपूर्वक क्रोधादि कषायों का उत्पादन ही यदि इसका प्रयोजन है तब तो इस त्याग व साधुवृत्ति की अपेक्षा गृहस्थदशा में रहना ही उत्तम है, परन्तु अधिकतर देखने में ऐसा ही आता है। धर्म पर विश्वास हो तो कैसे हो ?

और इसी प्रकार हम देखते हैं कि धर्म की प्रत्येक क्रिया यद्यपि अमृत रूप है, परन्तु प्रदर्शन मात्र के प्रयोजन से की जाने के कारण विष बन गई है। मानव के गुण हैं क्षमा, मृदुता, सरलता, सन्तोष, प्रेम, निष्कषायी, बलिदान, निष्काम सेवा, प्रसन्नता आदि जो धर्मात्माओं की अपेक्षा कहीं-कहीं साधरण जनों में अधिक पाये जाते हैं। इसके विपरीत धर्मात्माओं में दिखाई देते हैं, क्रोध, मान, माया, लोभ, लोकेषणा, स्वार्थ, दूसरों पर रौब जमाकर अपनी सेवा कराना, कषाय पुष्टि, उदासी, झुंझलाहट आदि। धर्म पर विश्वास हो तो कैसे हो ?

भैया दूसरों को उपदेश देना, कलापूर्ण भाषण से हजारों व्यक्तियों को एकत्र करने में गर्व मानना, भोजन की समस्या को अधिकाधिक जटिल बनाते जाना, भोजन शुद्धि व पैदल विहार की महिमा का प्रदर्शन करने के लिए अधिकाधिक आरम्भ व परिग्रह को स्वीकार करने से भी न घबराना, साक्षात् उद्दिष्ट भोजन को झूठ-मूठ अनुद्दिष्ट दिखाने व मानने के लिए अधिकाधिक कृत्रिमताओं का जाल फैलाना, आगन्तुकों से पहले झटके में ही कठोर त्याग कराना इत्यादि प्रवृत्तियाँ धर्म पर आस्था जमवाने के लिए नहीं बल्कि उसे हटाने के लिए है। लोकेषणा वश आज

यह सब कुछ नहीं देखा जा रहा है, इसी कारण धर्म ढोंग समझा जा रहा है। परन्तु वास्तव में यह ढोंग नहीं, क्योंकि धर्म का यह रूप है ही नहीं। बल्कि इसे अधर्म भी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

धर्म तो अंतरंग का प्रकाश है, जीवन का मधुर रस है, आत्मा का असीम शौर्य है, हृदय का माधुर्य है। कहाँ तक कहें, एक हजार जिह्वा द्वारा हजारों वर्षों तक निरन्तर कहते रहने पर भी इसकी महिमा का बखान किया जाना सम्भव नहीं है। इसकी महिमा का अंतरंग में विकास हो जाने पर ही ये सब क्रियायें धर्म कही जा सकती हैं। अन्यथा सब कुछ ढोंग है, रूढ़ि है, कषाय पोषण का मार्ग है।

इस महिमा की जाग्रति के लिए अन्धकारपूर्ण हृदय में अध्यात्म का प्रकाश करना होगा, जिस प्रकाश में व्यक्ति देख सके, स्वयं अपने हृदय की ग्रन्थियों को, पढ़ सके स्वयं अपने अन्त:करण को, समझ सके कषाय की विचित्र लीला को, अनुभव कर सके स्वयं अपनी चिन्ताओं व व्यग्रताओं को तथा उनके कारणों को।

प्रभो ! उस महिमा को प्राप्त करने के लिए बाहर में नहीं भीतर में कुछ कार्य करना होगा। बाहर में सब कुछ क्रियायें करके भी अथवा बड़े-बड़े शास्त्रों का अध्ययन करके भी वर्क्तृत्व कला प्राप्त करके भी अथवा शिष्य मण्डली एकत्र करके तथा अपने अनुयायियों से अधिकाधिक प्रशंसा प्राप्त करके भी अध्यात्म विषयक बड़ी-बड़ी चर्चायें व बातें करके भी यदि अन्त:करण को पढ़ना न सीखा तो क्या सीखा। अपनी हानि या लाभ अन्तरात्मा में तथा चिन्तनों में निहित है, बाहर शरीर में या उसकी क्रियाओं में नहीं। ऐसा निर्णय करके कषायों का शमन तथा इन्द्रियों का दमन करते हुए अधिकाधिक सात्विक गुणों को प्रगट करना ही यथार्थ साधन है। दूसरों के दोष देखने के बजाय पद-पद पर अपने को उपदेश देना ही धर्म का रहस्य है। मन में नित्य होने वाले अन्तर्द्वन्द्व को प्रत्यक्ष करके हेय-उपादेय का निर्णय करना, हृदय गुहा में छिपे अन्त: प्रभु से मुँह दर मुँह बात करना, प्रभु की वीतरागता से कुछ सीखना तथा उसकी छाप अपने जीवन पर लगाना ही धर्म मार्ग का अनुसरण करना है। बाह्य क्रियायें साधन हैं साध्य नहीं। साध्य विहीन साधन निरर्थक हैं। सच्ची साधना ही धर्म की प्रभावना का, डिगती हुई श्रद्धा का, स्थितिकरण कराने का व नास्तिकता मार्जन का एक मात्र उपाय है।

-क्षु.जिनेन्द्रवर्णी -अध्यात्म लेखमाला

पाठक जगत-

ध्रुवधाम-मासिक – चैतन्यधाम की प्राप्ति-चिंतन के क्षण.....

ध्रुवधाम का गौरवशाली १००वाँ अंक प्राप्त हुआ। आपका सशक्त संपादकीय पढ़कर प्रसन्नता हुई। इससे पूर्व श्री सम्मेदशिखरजी पंचकल्याणक महोत्सव विशेषांक भी यथासमय प्राप्त हो गया था। इस पत्रिका के माध्यम से आपने समाज की दयनीय दशा का जो चित्रण किया है उससे समाज को नई दिशा प्राप्त होगी- ऐसा विश्वास है।

हमारा जीवन ही लक्ष्य विहीन है। राग और द्वेष की भीषण ज्वाला में झुलस रहा है। हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? यह दौड़ हमें कहाँ ले जा रही है, हमने कभी गहराई से इसका विचार नहीं किया है।

'शुभ और अशुभ की ज्वाला में,
झुलसा है मेरा अन्तस्तल।'

अपने टंकोत्कीर्ण, सहज स्वभावी, सुख स्वरूपी, ज्ञानानन्दी, आनन्दघन, चैतन्यधाम के स्थायी निवास को कभी स्वीकार नहीं किया। हमें अपने स्वभाव की कभी महिमा ही नहीं आई। तृष्णा की धधकती ज्वाला में हम प्रतिपल उलझते आए हैं-जहाँ सुख का भण्डार है, हमने उसको कभी स्वीकार ही नहीं किया। अपने ध्रुवस्वभाव की महिमा अपने रग-रग में होनी चाहिए, वह कभी नहीं आई। हमें सच्चे सुख की प्राप्ति की धगस लगे तभी हमें अपनी आत्मा की असीम शक्ति का भान हो। जीवन में सुख शांति प्राप्त करने की भीतर में जिज्ञासा जगानी होगी। दुर्लभता से प्राप्त इस मनुष्य जीवन को सफल बनाना होगा अन्यथा हमारा जीवन कोरा कागज ही रह जायेगा। जहाँ अपने वैभव का निरन्तर स्मरण रहे.. चैतन्य का स्मरण रहे वही करने योग्य है। वही जीवन की सार्थकता है। राग और द्वेष की ज्वाला निरन्तर धधकती रहे तो ऐसे जीवन से क्या लाभ? संसार के बेमानी विकल्पों को तोड़ना होगा। स्व से अभिन्न तथा पर से भिन्न ज्ञायक स्वभावी अपने स्वभाव की महिमा स्थायीरूप से जगानी होगी।

हमारी हर सांस में ध्रुव की रटन चैतन्य की ज्योति का प्रकाश जगाना होगा। अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारण करना होगा। आकुलता भरा जीवन भी भला कोई जीवन है। जीना हो तो अपने गौरव को संभाल कर रखो। चैतन्य का स्मरण हो जीवन में आकुलता का अभाव हो- अपनी आत्मा का प्रतिपल स्मरण बना रहे-यही जीवन की सार्थकता है।

पत्रिका के माध्यम से आप ज्ञान की ज्योति जगा रहे हैं इस हेतु आपको हार्दिक धन्यवाद। इस माध्यम से हमें अपने चैतन्य ध्रुव स्वभाव का ज्ञान-भान

(शेष पृष्ठ १२ पर)

समाचार जगत-

ध्रुवधाम- आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट बांसवाड़ा द्वारा श्री धूलजीभाई, महीपालजी, धनपालजी ज्ञायक परिवार की भावना व विशिष्ट अर्थ सहयोग से देश की मुमुक्षु समाज का सहयोग प्राप्त कर संस्थापित रत्नत्रय तीर्थ 'ध्रुवधाम' में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनांक १४ जुलाई से २२ जुलाई तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। महोत्सव के संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. पण्डित श्री जतीश चन्द्र शास्त्री के कुशल निर्देशन में पं. सुबोध कुमार शास्त्री व पं. सुनील कुमार शास्त्री द्वारा आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सहयोग से सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर ब्र. जतीशभाईजी ने अनंत सुख प्राप्त अनंत सिद्ध भगवन्तों के गुणानुवाद करने वाले सिद्धचक्र मण्डल विधान की जयमालाओं व अन्य छन्दों के अर्थ बताकर विधान करने की सार्थकता सिद्ध की। ब्र. सुमतप्रकाशजी ने समयसार ग्रन्थाधिराज के माध्यम से अपने दोषों का प्रक्षालन कर किस तरह निर्दोष दशा, अप्रतिक्रमण रूप दशा को प्राप्त किया जा सकता है इसका विविध उदाहरणों के द्वारा सुन्दर विवेचन किया। हिम्मतनगर से पधारे पं. रजनीभाई दोसी ने सरल व आकर्षक शैली में प्रवचनसार ग्रन्थ के माध्यम से इन्द्रिय ज्ञान ज्ञान नहीं अज्ञान है व इन्द्रिय सुख, सुख नहीं दुःख ही है अतः वे हेय हैं तथा अतीन्द्रिय ज्ञान व सुख ही ज्ञान व सुख है इसमें ही स्वाधीनता है, आनंद है अतः उपादेय है प्रगट करने योग्य है – इस विषय को स्पष्ट किया।

प्रथम दिवस श्री प्रकाशचन्द्र गंभीरमलजी मानावत अहमदाबाद परिवार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। मुख्य कलश की स्थापना मुक्ति मण्डल संघ दादर मुम्बई की अध्यक्षा डॉ. बासन्तीबेन के साथ श्रीमती भारतीबेन व श्रीमती मनोरमाबेन दादर द्वारा की गई। कार्यक्रम के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री अजित जैन बड़ोदरा व सह आमंत्रणकर्ता डॉ. बासन्तीबेन मुम्बई (मुक्ति मंडल संघ) थे। विविध उद्घाटन श्री नवीनभाई भूता, श्री शान्तिभाई, श्री विजयभाई दादर मुम्बई, श्री चन्द्रेशभाई भूता दाहोद परिवारों द्वारा किये गये। सौधर्म इन्द्र श्री जीतमल शाह मुम्बई थे।

शिविर में डॉ. बासन्तीबेन शाह मुम्बई व श्री जिनेन्द्र दोसी मुम्बई द्वारा कक्षायें संचालित की गईं। व्याख्यानमाला के अंतर्गत पं. रितेशकुमार शास्त्री, पं. प्रवीणकुमार शास्त्री, पं. सतीश शास्त्री, पं. सुमित शास्त्री ध्रुवधाम, पं. सुनील कुमार शास्त्री प्रतापगढ़, मंगलार्थी अगम जैन, पं. सुनीलकुमार धवल भोपाल, पं. संदीपकुमार शास्त्री दिल्ली, पं. सुरेन्द्र कुमारजी उज्जैन आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक कायक्रमों में ध्रुवधाम के विद्यार्थियों द्वारा 'कार्य उपादान से या निमित्त से' इस विषय पर वादविवाद व 'क्रमबद्धपर्याय अनुशीनल' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। जैन बालिका संस्कार संस्थान उदयपुर की बालिकाओं द्वारा डॉ. ममता जैन के निर्देशन में 'संस्कारों का महत्त्व' विषय पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। सभी कार्यक्रमों को सभी दर्शकों ने सराहा।

२१ जुलाई को श्री बसन्तभाई दोसी की अध्यक्षता, श्री नरेश एस. जैन व श्री राजूभाई शाह अहमदाबाद के मुख्यातिथ्य, मुख्य आमंत्रणकर्ता श्रीमती अनीता अजित जैन बड़ोदरा, एवं श्री लक्ष्मीभाई गांधी सोनासण, श्री सिद्धार्थकुमार दोसी, श्री जय कुमार जैन रतलाम, श्री प्रतीकभाई अहमदाबाद, श्री अनिलभाई दोसी, श्री जवेरचन्द जैन, श्री देवीलाल जैन, श्री हीरालाल हथाया, श्री राहुल नवीन भाई शाह मुम्बई, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जेठाणा, श्री हीरालाल जैन कलिंजरा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। स्वागत, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महीपाल ज्ञायक, महामंत्री श्री धनपाल ज्ञायक, ट्रस्टी श्री वीरेन्द्र ज्ञायक तथा श्री विनोद जैन, मुकेश ज्ञायक, श्री योगेश भरड़ा, श्री सुमतिलाल लुणदिया, श्री अनिल शाह ने किया। समारोह के बाद मानस्तंभ में विराजित जिनबिम्बों का प्रथम मस्तकाभिषेक मंगल स्वर लहरियों के साथ किया गया।

अन्तिम दिन शांतियज्ञ के साथ नव दिवसीय महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

- मुकेश ज्ञायक

जैन बालिका संस्कार संस्थान का उद्घाटन सम्पन्न

उदयपुर- श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट उदयपुर द्वारा बालिकाओं को जैन तत्त्वज्ञान व श्रावकाचार के संस्कारों संयुक्त उत्कृष्ट लौकिक शिक्षा प्रदान कराने हेतु जैन बालिका संस्कार संस्थान का शुभारंभ किया गया है, जिसका विधिवत् उद्घाटन दिनांक २९ व ३० जून को समारोह पूर्वक किया गया।

समारोह के प्रथम दिन पंचपरमेष्ठी विधान पं. अजितकुमार शास्त्री अलवर, पं. रतनचन्द शास्त्री कोटा, व पं. अंकित शास्त्री लूणदा द्वारा भक्तिभाव पूर्वक सम्पन्न कराया गया। विधान आमंत्रण कर्ता श्री माणकलाल ठाकुर्डिया परिवार उदयपुर थे। ध्वजारोहण श्री निहालचन्द

जैन जयपुर द्वारा किया गया। मंगल कलश की स्थापना श्रीमती अनीता-अजित जैन बड़ोदरा, डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई, ब्र. मंजूलता जैन, ब्र. अर्चना जैन कोटा व कामना बेन सोनगढ़ के द्वारा स्थापित किये गये।

इस अवसर पर पं. पीयूषकुमार शास्त्री जयपुर, पं. ऋषभकुमार शास्त्री उदयपुर, पं. सिद्धार्थकुमार दोसी रतलाम के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ। संस्थान की बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत् डॉ. ममता जैन के निर्देशन में भावभीनी प्रस्तुतियाँ दी गईं।

समारोह के द्वितीय दिवस संस्थान का उद्घाटन श्री ताराचन्द जैन की अध्यक्षता व श्री अजित जैन बड़ोदरा के मुख्यातिथ्य में श्री नरेश एस. जैन अहमदाबाद द्वारा किया गया। इस अवसर पर देशभर में संचालित तत्त्वप्रचार की विभिन्न गतिविधियों में तन-मन-धन से समर्पित होकर जिनधर्म प्रभावना करनेवाले श्री सुजानमल गदिया, श्री प्रेमचन्द बजाज कोटा, श्री अजित जैन बड़ोदरा, श्री मही पाल ज्ञायक बांसवाड़ा व डॉ. वासन्तीबेन शाह का उदयपुर संभागीय मुमुक्षु समाज की ओर से श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्ट श्री कन्हैयालाल दलावत, श्री ताराचन्द जैन, श्री भागचन्द कालिका, श्री चांदमल किकावत, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ललितकुमार किकावत, मंत्री श्री नरेन्द्रकुमार दलावत, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्रकुमार वालावत, सहमंत्री श्री भावेश कालिका, ट्रस्टी श्री राजकुमार अजमेरा रतलाम, श्री बृजलाल हथाया मुम्बई, श्री नितिन गंगावत उदयपुर, श्री अंकित शास्त्री लूणदा द्वारा पत्र, शॉल, श्रीफल भेंटकर कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर श्री चन्द्रभान जैन पूर्व अध्यक्ष सिद्धायतन, डॉ. गुलाबचन्द जैन मंत्री सिद्धायतन, श्री प्रदीप कुमावत निदेशक आलोक संस्थान, श्री नेमिचन्द बघेरवाल, श्री नरेश लुहाड़िया भीलवाड़ा, श्री जिनेन्द्र शास्त्री, पं. खेमचन्द शास्त्री उदयपुर, पं. ऋषभ शास्त्री, पं. सोनू शास्त्री अहमदाबाद विशिष्टातिथि के रूप में उपस्थित थे।

ट्रस्टी श्री अजित जैन बड़ोदा ने एक भव्य संकुल की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि उदयपुर पूज्य गुरुदेवश्री ५ बार पधारे हैं – ऐसे स्थान पर मुमुक्षु समाज का एक भव्य संकुल बनना चाहिए। जिसमें सभी साधर्मियों को तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए। एतदर्थ उन्होंने परम संरक्षक/संरक्षक आदि के रूप में सहयोग करने का निवेदन किया। उन्होंने कहा कि यह बालिकाओं का दूसरा केन्द्र है इसे सभी मुमुक्षु मण्डलों व दानश्रेष्ठियों

को उदारतापूर्ण सहयोग कर भव्यता प्रदान करना चाहिये।

ब्र. मंजूलता जैन ने बालिकाओं में संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस वर्ष म. प्र., दिल्ली, उ.प्र. व राजस्थान की ११ बालिकाओं को प्रवेश दिया गया है उन बालिकाओं का भी स्वागत किया गया। अन्त में अध्यक्ष ललितकुमार किकावत ने आभार प्रदर्शन किया। संचालन पं. राजकुमार शास्त्री ने किया। **– नरेन्द्र दलावत मंत्री**

कोटा– श्री दिग. जैन बाल विकास पारमार्थिक न्यास कोटा द्वारा २१वाँ जैन दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन श्री विजय जैन व श्री विपिन जैन ए.जैनको परिवार द्वारा एवं झण्डारोहण श्री चौथमल लक्ष्मीकान्त बावरिया परिवार द्वारा किया गया।

शिविर रामपुरा, इन्द्र विहार, छावनी, व बसन्त विहार केन्द्रों पर संचालित किये गये। रामपुरा में पं. सचिन जी खनियांधाना द्वारा ४ घंटे कक्षायें संचालित की गईं व ब्र. चेतनाबेन देवलाली ने महिलाओं की कक्षायें संचालित कीं। इन्द्रविहार में ब्र. नन्हें भैया सागर द्वारा तत्त्व प्रभावना हुई। शिविर में ५०० शिक्षार्थियों ने लाभ लिया।

२३ जून को श्री राजेन्द्र कुमार बज की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण किया गया। बालकों की कक्षायें आचार्य धरसेन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा के छात्र विद्वानों द्वारा संचालित की गईं।

– सुशीलकुमार जैन, संयोजक

मलकापुर– पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के पुण्य प्रभावना योग में श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट मलकापुर द्वारा निर्माणाधीन श्री कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर एवं पाठशाला भवन का शिलान्यास पंच परमेष्ठी विधान पूर्वक ब्र. जतीशचन्द्र शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पं. सुनीलकुमार धवल भोपाल, पं. कान्तिकुमारजी, पं. रमेशचन्दजी इन्दौर के द्वारा २७-२८ जून को सम्पन्न कराया गया।

इस अवसर पर ब्र. केशरीचन्दजी धवल छिंदवाड़ा, ब्र. यशपालजी जयपुर, पं.अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

शिलान्यास सभा विधायक श्री चैनसुख संचेती मलकापुर, मुख्यातिथि श्री राजेन्द्र पाटनी पूर्व विधायक वासिम, परम संरक्षक ब्र. धन्यकुमार बेलोकर गजपंथा मंचासीन थे।

परमागम मंदिर के निर्माण सहयोगी श्री अनंतराय अमुलखराय सेठ मुम्बई की अनुमोदना व शिलान्यासकर्ता श्री विमल कुमारजी दिल्ली की विशेष सूचना पर शिलान्यास विधि श्री हर्षवर्धनजी

ओरंगाबाद एवं श्री संतोष पाटनी वासिम द्वारा की गई। पाठशाला भवन का शिलान्यास श्री नितिन खण्डवा, एवं विकास चिन्तामणि खण्डवा द्वारा हुआ। ध्वजारोहण श्री अशोक जैन सुभाष ट्रान्सपोर्ट भोपाल द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सुभाष चांदीवाल मुम्बई, श्री प्रमोद मस्तांई सिद्धायतन, श्री सुभाष अजमेरा अकोला एवं खण्डवा, सनावद, इन्दौर, ढ़साला आदि स्थानों से अनेक साधर्मियों ने पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

– विनोद निरखे, महामंत्री

ध्रुवधाम- श्रावण कृष्णा एकम् (दिनांक २३ जुलाई) को ध्रुवधाम में बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की अध्यक्षता व पं. प्रवीणकुमार शास्त्री के विशिष्टातिथ्य में वीर शासन जयन्ती के उपलक्ष्य में सभा का आयोजन किया गया। सभा में डॉ. ममता जैन, अक्षय चव्हाण, बाहुबली चौगुले, अगम जैन, विराग जैन कोटा, स्वयं जैन, विपाशा जैन ने अपने विचार प्रस्तुत किये। ब्र. सुमतप्रकाशजी ने प्रासंगिक भजनावलि के माध्यम से वीरप्रभु व उनके शासन का यशोगान किया एवं जिनवाणी के अध्ययन स्वाध्याय चिंतन की प्रेरण दी। संचालन अखिलेश शास्त्री ने किया।

(पृष्ठ १५ का शेष) में सरस रचनायें की हैं जो हमें नैतिक और धार्मिक जीवन जीते हुये शान्तिमय जीवन जीने की कला सिखाते हैं। ऐसी पुस्तकें न पढ़ें जो भय, अंधविश्वास पैदा करें। काल्पनिक घटनाओं पर आधारित साहित्य पढ़ने से समय की बर्बादी ही होती है।

आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार ग्रन्थ को पढ़कर श्री कानजीस्वामी इस युग में आध्यात्मिक क्रान्ति के सूत्रधार बने। समयसार व गोम्मटसार ग्रन्थों को पढ़कर श्रृंगार रस के कवि बनारसीदास आध्यात्मिक रचनाकार बन गये। महात्मा गांधी भी सत्साहित्य पढ़कर ही महात्मा व राष्ट्रपिता बने। हर भाषा में सत्साहित्य रचा गया है अतः अपनी रुचि अनुसार जरूर अध्ययन करना चाहिए।

स्वाध्याय से ज्ञान तो बढ़ता ही है साथ ही विवेक जाग्रत होता है। अच्छे-बुरे का निर्णय करने की शक्ति बढ़ती है। प्रयोजनभूत व अप्रयोजनभूत (जो हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो वह प्रयोजनभूत जो सहायक न हो वह अप्रयोजनभूत है) का निर्णय होता है। लौकिक एवं पारलौकिक किसी भी प्रकार की उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। **– मानमल जैन, कोटा**

बधाई हो बधाई !

१. आत्मार्थी कन्या निकेतन दिल्ली की छात्रा आत्मार्थी आयुषी जैन सुपुत्री श्री प्रवीणकुमार जैन अध्यक्ष अ. भा. जैन युवा फैडरेशन उस्मानपुरा दिल्ली ने बाल भारती विद्यालय से १२वीं में कॉमर्स विषय में ९४.४ प्रतिशत अंक प्राप्त वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया। साथ ही कन्या निकेतन में भी चार वर्ष का धार्मिक पाठ्यक्रम पूर्ण कर परीक्षा में ९३ प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान के साथ जैन रत्न की उपाधि प्राप्त की।

२. आत्मार्थी कन्या निकेतन दिल्ली की छात्रा आत्मार्थी सलोनी जैन सुपुत्री श्री संजयकुमार जैन ने बालभारती विद्यालय से कक्षा १०वीं में १० सी.जी.पी. प्राप्त किया है। साथ ही कन्या निकेतन में भी कई धार्मिक गतिविधियों में पुरस्कार प्राप्त किये व परीक्षा में ९३ प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

३. सुश्री विपाशा जैन को वरिष्ठ उपाध्याय कक्षा में राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर घाटोल में आयोजित एक राजकीय समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री श्री दयाराम परमार द्वारा जिला कलेक्टर श्री के. बी. गुप्ता, श्रीमती रेशम मालवीया जिला प्रमुख की उपस्थिति में लेपटॉप प्रदान किया गया।

ध्रुवधाम परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

घुवारा- अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री महावीर दिगम्बर जिनमंदिर (बारव) में नंदीश्वर द्वीप स्थित अकृत्रिम जिनालय जिनबिम्बों की पूजन की गई एवं श्री चन्द्रभान जैन द्वारा तीन समय विविध विषयों पर कक्षायें भी ली गईं।

सिद्धायतन - सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर आचार्य समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के छात्रों द्वारा पूजन, भक्ति आदि विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये।

रत्नत्रयतीर्थ 'ध्रुवधाम' में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनांक १४ जुलाई से २२ जुलाई, २०१३ तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के भव्य आयोजन पर समाज द्वारा ध्रुवधाम ध्रुवफण्ड एवं विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सधन्यवाद प्राप्त सहयोग।

ध्रुवधाम ध्रुवफण्ड के परमशिरोमणी संरक्षक –

१. श्रीमान् धुलजीभाई सुपुत्र महीपाल, धनपाल, पौत्र वीरेन्द्र, मुकेश, शीतल, श्रेंयाश एवं ध्रुवराज ज्ञायक परिवार, बांसवाड़ा

ध्रुवधाम ध्रुवफण्ड के शिरोमणी संरक्षक –

१. श्रीमान् विमलजी धर्मपत्नी कुसुमबेन सुपुत्र रजनीश, नीरज एवं सुपुत्री रेशू जैन परिवार, दिल्ली
२. श्रीमान् पूनमचंदजी लुहाड़िया सुपुत्र श्री विनयचंदजी परिवार, मुम्बई
३. श्रीमान् अजित जैन धर्मपत्नी श्रीमती अनिताजी परिवार, बड़ोदरा
४. श्रीमान् नरेश भाई एस.जैन परिवार, अहमदाबाद

ध्रुवधाम ध्रुवफण्ड के संरक्षक –

१. श्रीमान् जीतमलजी धर्मपत्नी मंजुलाबेन सुपुत्र कमलेश, मुकेश, विनोद, कैलाश जैन परिवार, मुम्बई
२. मातेश्वरी श्री वरजूबेन दलीचंदजी सुपुत्र रमेशभाई, महेन्द्रभाई हताया परिवार, मुम्बई
३. श्रीमान् मांगीलालजी सूरजमलजी चंदन परिवार, मुम्बई
४. श्रीमान् जवेरचंदजी दलीचंदजी सुपुत्र प्रकाशभाई, कमलेशभाई हताया परिवार, मुम्बई
५. श्रीमान् देवीलालजी कस्तूरचंदजी परिवार, मुम्बई
६. श्रीमान् लक्ष्मीचंदजी गाँधी परिवार, सोणासन
७. श्रीमान् विजयजी धर्मपत्नी भारतीबेन (हाथरसवाले), दादर-मुम्बई
८. श्रीमान् माणकलालजी ठाकुर्डिया परिवार, उदयपुर
९. श्रीमान् ताराचंदजी जैन परिवार, उदयपुर
१०. श्रीमान् जयकुमारजी जैन परिवार, रतलाम

११. श्रीमती दीपिकाबेन अनिलकुमार दोशी, मुम्बई
१२. श्रीमान् जयन्तिलालजी परिवार, चेन्नई
१३. श्रीमान् राकेशभाई सुरेशभाई गाँधी परिवार, दाहोद
१४. श्रीमती मिनाक्षीबेन नवीनभाई मेहता परिवार, मुम्बई
१५. श्रीमान् हीरालालजी देवेन्द्रकुमार काला परिवार, बड़नगर

ध्रुवधाम ध्रुवफण्ड के परमसहायक –

१. श्रीमान् सुनीलजी अनिलजी सौभागमलजी , मुम्बई

आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय में विद्यार्थी गोद राशि –

१.	श्री प्रफुलभाई डी. राजा, नैरोबी	४	५ वर्ष
२.	पं. श्री सिद्धार्थकुमार दोशी, रतलाम	१	५ वर्ष
३.	राहील राहूल नवीन के मेहता, मुम्बई	१	५ वर्ष
४.	पं. श्री नीलेश भाई नाथालाल शाह,मुम्बई	१	५ वर्ष
५.	श्री बृजलालजी दलीचंदजी हीरालाल जी हथाया	१	५ वर्ष
६.	श्री प्रकाशचंदजी गम्भीरमलजी, अहमदाबाद	१	५ वर्ष
७.	श्री लक्ष्मीचंदजी गाँधी, सोणासन	१	१ वर्ष
८.	श्री विजयजी धर्मपत्नी भारतीबेन, मुम्बई	१	१ वर्ष
९.	श्री नवीनचंदजी भूता, मुम्बई	१	१ वर्ष
१०.	श्री सुरेन्द्रकुमार शाह, जेणाना	१	१ वर्ष

-निवेदन-

'समर्पण' द्वारा आध्यात्मिक, नैतिक, प्रेरक, सामाजिक कविताओं के संकलन 'काव्य सरिता' का प्रकाशन शीघ्र ही किया जा रहा है। आपके पास कोई गेय कविता/व्यंग्य उपलब्ध हों तो भिजवावें साथ ही कोई भी प्रकाशन में या मूल्य कम करने में सहभागी बनना चाहें तो कृपया समर्पित भाव से शीघ्र ही संपर्क करें।

मो.: 09414103492

आवरण पृष्ठ का परिचय

श्री ज्ञायक पारमर्थिक ट्रस्ट बांसवाड़ा द्वारा संस्थापित रत्नत्रय तीर्थ 'ध्रुवधाम'। पंच बालयति जिनमंदिर, स्वाध्याय भवन, मानस्तंभ की रचना व आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय का संचालन। आवास व भोजन की सदैव समुचित व्यवस्था।

संपर्क सूत्र - 09414101432

ध्रुवधाम मासिक (अगस्त-२०१३) तिथि योजना

नाम	स्थान	तिथि	सन्दर्भ में
श्री नवीन के. मेहता	मुम्बई	०१	धर्मप्रभावना
श्री फतेहलाल (गोरेगांव)	मुम्बई	०२	धर्मप्रभावना
श्री नितिन चिमनलाल शाह	मुम्बई	०३	धर्मप्रभावना
श्री बृजलाल डी. जैन	मुम्बई	०४	ब्रजलालजी जन्मदिवस
श्री कमलेश जीतमल जैन	मुम्बई	०५	ध्रुवी जन्मदिवस
श्री सुशील जैन	जबलपुर	०६	धर्मप्रभावना
श्री भूपेन्द्र बदामीलाल जैन	आंजना	०७	प्रतिमा जन्मदिवस
श्री रमेशचंद मोतीलाल शाह	नौगामा	०७	रमेशजी जन्मदिवस
श्री रमणलाल मोतीलाल शाह	मुम्बई	०८	रिभांश जन्मदिवस
तारा एम. जैन	मुम्बई	०८	ताराजी जन्मदिवस
श्री देवीलाल के. जैन	मुम्बई	०८	बेनश्री की जन्मदिवस
श्री विनोद कु. रतनलाल शाह	आंजना	०९	तुषार जन्मदिवस
श्री दिलीप के. नानुलाल	अरथूना	१०	पराग जन्मदिवस
श्री नय वैभव सरैया	दाहोद	११	नय जन्मदिवस
रेणु ए. जैन	घाटकोपर	१२	रेणुजी जन्मदिवस
श्री फतेहलाल (गोरेगांव)	मुम्बई	१३	धर्म प्रभावना
श्री चन्द्रकान्त फौजमल शाह	बांसवाडा	१५	सुनील जन्मदिवस
मुन्नी आर. जैन	मुम्बई	१५	मुन्नीजी जन्मदिवस
अनीता (श्यामबैण्ड की गली)	जबलपुर	१६	धर्म प्रभावना
श्री निर्मल (विवेक कटपीस)	जबलपुर	१७	धर्म प्रभावना
श्री दिगम्बर परिवार	जबलपुर	१८	धर्म प्रभावना
भाविका बी. जैन	मुम्बई	१९	भाविकाजी जन्मदिवस
श्री प्रकाशचंद कान्तिलाल	नौगामा	२०	सम्यक जन्मदिवस
शर्मिष्ठा शैलेश शाह	मुम्बई	२१	रक्षाबन्धन उपलक्ष्य
प्रांजल ए. शाह	शाह	२१	प्रांजलजी जन्मदिवस
श्री जयन्तिलाल चांदमल शाह	कुशलगढ	२४	रिया जन्दिवस
श्री अतुल एम. शाह	मुम्बई	२६	अतुलजी जन्मदिवस
श्री हर्षवर्धन मोतीलाल दोसी	गढी	२७	हितांश जन्मदिवस
श्री नवीन के. मेहता	मुम्बई	२८	रुचीजी जन्मदिवस
श्री विश्वास के. रमणलाल जैन	कुशलगढ	३०	विश्वास जन्मदिवस
श्री नवीन के. मेहता	मुम्बई	३१	धर्म प्रभावना